International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 373-374

कबीरदास की 'साखी' में अनुभूति पक्ष

Dr. Swati
Principle, Divya Jyoti Central School, Hisar, Haryana, India

प्रस्तावना

भक्तिकाल संत काव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि कबीरदास का हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान है। अनपढ़ होने के बावजूद ये एक महान समाज सुधारक, क्रांतिकारी एवं निर्भिक कवि थे। अपने गुरु श्री रामानंद के मार्गदर्शन व आर्शीवाद से ये निरन्तर मानव–कल्याण में अग्रसर रहे। कबीरदास की रचना 'बीजक' के तीन भाग हैं– 'साखी', 'सबद' और 'रमैनी'। प्रस्तुत लेख में मैं कबीरदास की 'साखी' में अनुभूति पक्ष के अन्तर्गत नारी भावना, जाति–पाति का विरोध, निर्गुण ईश्वर में विश्वास, बाह्याडम्बरों का विरोध, बहुअवतारवाद का विरोध, गुरु का महत्व, माया के प्रति चेतावनी, नाम–स्मरण पर बल, सदाचार का महत्व और रहस्यवाद आदि बिन्दुओं पर प्रकाश डालने का प्रयत्न कर रही हूँ।

कबीरदास जी निर्गुण ईश्वर में विश्वास करते थे। उनका जीवन मानव सेवा के लिए समर्पित था। वे मानव सेवा को ही ईश्वर की सेवा का रूप मानते थे। वे मूर्ति–पूजा का खण्डन करते थे। उनका मानना था कि निर्गुण निराकार ईश्वर हम सबके ह्रदय में विराजमान है। अतः उसे मन्दिर, मस्जिद और गुरुद्वारे में ढूंढना व्यर्थ है।

''कस्तूरी कुँडल बसै, मृग ढूंढे बन माहिं।
ऐसे घट में पीव है, दुनियाँ जानै नाहिं।।''[1]

कबीरदास जी मूर्ख तथा अंधविश्वासी मनुष्यों को जागृत करने का प्रयास करते हुए कहते हैं–

''पाहन पूजै हरि मिलै, तो मैं पूजुं पहार।
या ते वा चाकी भली, ये पीस खाए संसार।।''[2]

कबीरदास जी ने युग की आवश्यकतानुसार बहुअवतारवाद का विरोध करते हुए हिन्दू–मुस्लिम एकता को स्थापित करने का प्रयास किया। उनका मानना है–

''अक्षय पुरुष एक पेड़ है, निरंजन वाकी डार।
तिरदेव शाखा भए, पात भया संसार।।''[3]

हिन्दुओं और मुसलमानों में प्रचलित बाह्य आडम्बरों का कबीरदास जी खुलकर विरोध करते है। वे निर्भिक होकर दोनों जातियों में प्रचलित कुप्रथाओं की कटु आलोचना करते हुए कहते हैं कि–

''माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माहिं।
मनवा तो चहुँ दिसै फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं।।[4]

इसी दिशा में मुसलमानों को झकझोरते हुए एवं फटकारते हुए कहते हैं–

''कांकर पत्थर जोरि के, मस्जिद लई बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, बहिरा हुआ खुदाय।।[5]

कबीरदास जी दिल के साफ, दिमाग से दुरस्त व्यक्तित्व के स्वामी थे। वे सभी मनुष्यों को ईश्वर की सन्तान मानते थे। अतः वे समाज में विद्यमान जात–पात का खुलकर विरोध करते थे। क्योंकि उनके अनुसार मनुष्य का मूल्यांकन कर्म के आधार पर होना चाहिए ना कि जन्म के आधार। इस संसार में जात–पात से किसी की पहचान छोटे या बड़े के रूप में नहीं की जानी चाहिए। कबीरदास जी अपना मत प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि–

''साईं के सब जीव हैं, कीरी कुंजर दोइ।
इक ज्योति से सब उत्पन्ना, का ब्राह्मण शूद्र।।''[6]

समाज में व्याप्त वर्ग–भेद मनुष्य के अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा खतरा है। यह मानव विकास का प्रमुख बाधक तत्व है। इसलिए कबीरदास जी अपना पक्ष प्रस्तुत करते हुए कहते हैं–

''जाति–पाति पूछे नहिं कोई।
हरि को भजे सो हरि का होई।।''[7]

मनुष्य बाह्य आडम्बरो से तभी मुक्ति प्राप्त कर सकता है जब उसे जीवन में कोई सही राह दिखाने वाला हो अर्थात् उसका मार्ग दर्शक हो। इसके लिए जीवन में उसे एक सच्चे गुरु की आवश्यकता है। गुरु के मार्गदर्शन व आर्शीवाद से ही जीवन सार्थक हो पाता है। इसलिए वेदों–पुराणों में भी गुरु की महिमा का उल्लेख किया गया है। गुरु की महिमा अपरम्पार है।

''गुरु गोबिन्द दोऊ खड़े, काकै लागुं पाय।
बलिहारि गुरु आपने, जिन गोबिन्द दियो मिलाय।।''[8]

जीवन में क्या सही है, क्या गलत है? क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए? इन समस्त उलझनों से निकलने का एक मात्र सशक्त ब्रह्मशस्त्र हैः गुरु। गुरु ही हमारे जीवन का सही मार्गदर्शन कर हमें अज्ञान के अन्धकार से बाहर निकालकर ज्ञान की राह पर ले जाता है। अतः कबीरदास जी मानवजीवन में गुरु की महिमा पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि–

''सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लेचन अनँत उघारिया, अनँत दिखावनहार।''[9]

कबीरदास जी ने जीवन में जितना गुरु का स्थान अनिवार्य माना है उतना ही प्रेम का भी। ज्ञान का महत्व तभी है जब मानव जीवन में प्रेम का संचार बना रहे। प्रेम की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए कबीरदास जी कहते हैं–

''जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान।
जैसे खाल लुहार की, साँस लेते बिन प्राण।।''[10]

कवि प्रेम के रुप को ओर भी स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि–

''प्रेम छिपाया न छिपै, जा घट परगट होय।
जो पै मुख बोले नहीं, तो नैन देत है रोय।।''[11]

कबीरदास जी ने नारी के आदर्श पवित्र रुप को सराहा है, उसे पूजा है। वे नारी के उत्तम चरित्र की प्रशंसा करते हैं। वे नारी के श्रेष्ठ चरित्र को जीवन की पूंजी मानते हैं। वे नारी के आदर्श रुप की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं–

''पतिव्रता मैली भली, काली कुचित कुरुप।
पतिव्रता के रुप पर वारौ कोटि सरुप।।''[12]

समाज के विषाक्त वातावरण का कुप्रभाव नारी जीवन पर भी पड़ा। उसने अपने आदर्श–मूल्यों व नैतिकता को अपने तुच्छ स्वार्थों के लिए बलि चढ़ा दिया। जिससे कबीरदास को नारी से चिढ़ उत्पन्न हो जाती है और वे मनुष्यों को नारी के पतित व घृणित रूप से दूर रहने के लिए प्रेरित करते हैं। यथाः

''नारी की झांई परत, अंधा होत भुजंग।
कबिरा तिनकी का गति, जो नित नारी के संग।।''[13]

वे नारी के पवित्र व आदर्श रुप पर ही बल नहीं देते अपितु समस्त मानव जाति से सदाचार की अपेक्षा करते हैं। वे मन की पवित्रता को स्वस्थ जीवन का आधार मानते हैं। सदाचार के द्वारा ही स्वस्थ समाज का सपना साकार किया जा सकता है। इसी से मानव कल्याण सम्भव है। सदाचार में मनुष्य के कर्मों के साथ–साथ उसकी वाणी की भी महत्ता है। कवि कहता है–

''जो तो को काँटा बुवै, ताहि बोव तू फूल।
तोहि फूल तो फूल है, बाको है तिरसूल।।''[14]

इसी प्रकार वाणी की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कवि कहता है–

''ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय।।''[15]

मानव जीवन का अन्त निश्चित है। अतः इसे हमें व्यर्थ नहीं गवाँना चाहिए। अपितु ईश्वर भक्ति में हमें अपना जीवन लगा देना चाहिए। ईश्वर भक्ति से ही मनुष्यों को सभी दुःखों से छूटकारा प्राप्त होता है। इसलिए ईश्वर का सुमिरन करते रहना चाहिए। कवि कहता है–

''दुःख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुःख काहे को होय।।''[16]

कबीरदास के अनुभूति पक्ष में रहस्यवाद का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इनका रहस्यवाद उच्च कोटि का है। शंकर के अद्वैतवाद का प्रभाव भी इनके रहस्यवाद में देखने को मिलता है। कबीरदास के रहस्यवाद का चित्रण निमांकित पंक्तियों में दृष्टव्य है–

''जल में कुम्भ कुम्भ में जल है भीतर बाहर पानी।
फूटा कुम्भ जल जलहि समाना, यह तत् कहो ग्यानी।।''[17]

उपसंहार

कबीरदास की 'साखी' के अनुभूति पक्ष के अध्ययन से हमें ये ज्ञात होता है कि ये एक महान समाज–सुधारक सन्त कवि हैं। जिन्होनें समाज व मानव कल्याण के लिए अथक प्रयत्न किये। समस्त मानव जाति को अज्ञानता के अन्धकार से बाहर निकालने का स्तुत्य प्रयास किया। मानव उपकार के लिए किये गए। इनके असंख्य सार्थक प्रयासों के कारण ही इनका नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। अनेक कवियों के साथ–साथ कबीरदास जी के महत्वपूर्ण योगदान के कारण भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल कहा जाता है।

सन्दर्भ सूची

1. 'कबीर ग्रंथावली' : डॉ० श्याम सुन्दरदास
2. 'मध्यकालीन काव्य कुंज' : डॉ० रामसजन